ISSN: 2582-7162

लेख

जल संकट व स्वास्थ्य संकट

मोहन लाल बैरवा

M.Sc.(Geography)- SET, M.A. Education (NET)
Assistant Professor Raghukul College of Education, Jaipur (Raj.)

Corresponding author: Mohan Lal Bairwa, Assistant Professor Raghukul College of Education, Jaipur (Raj.)
Email: mohanlalb811981@gmail.com

भूमिका :-

विश्व कुछ समय बाद ही जल संकट का सामना करने के करीब है। क्योंकि दिनों-दिन स्वच्छ जल की मांग बढ़ती जा रही है। सभी को पानी व स्वच्छता की उपलब्धता सुनिश्चित करने का सतत विकास का लक्ष्य -6 हासिल करने के लिए सरकारों ने समय-समय पर उचित नीतियाँ, योजनाऐं व कार्यक्रम चलाए हैं। परन्तु आज भी भारत की करीब 50 प्रतिशत ग्रामीण व 25 प्रतिशत शहरी जनता को सुरक्षित स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 70 प्रतिशत भूजल उपयोग के लायक नहीं है।

मुख्य शब्द : जल; संकट; स्वास्थ्य संकट

How to cite this article: बैरवा मो ला. जल संकट व स्वास्थ्य संकट. SDES-IJIR; 2023; 4-5: 691-693
Submitted: 04-September-2023; **Accepted:** 21-October-2023; **Published:** 31-October-2023

क्यों हो रहें हैं जल स्रोत दूषित :-

भारत में रोजाना लाखों लीटर अपशिष्ट जल नदियों व अन्य जल स्त्रोतों में आता है जिसमें से कुछ मात्रा में तो जल का परिशोधन कर लिया जाता हैं परन्तु इसका अधिकतर भाग अशोधित रह जाता है जो कि जल प्रदूषण का कारण बनता है। जल प्रदूषण के कारण मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

केन्द्रीय जल प्रदूषण निवारण व नियंत्रण मण्डल की एक रिपोर्ट के अनुसार देश के 142 प्रथम श्रेणी के नगरों से प्रतिदिन 70 लाख लीटर सीवेज का जल निकलता है। यह जल पास की नदी में पहुँचकर उसे प्रदूषित कर देता है। इसके अलावा नदियों के किनारे बसे हुए नगरों के कल कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों से भी जल स्रोत दूषित होते जा रहे हैं।

कृषि कार्यों में प्रयोग किये जा रहे रासायनिक कीटनाशकों, रासायनिक खादों व बड़े-बड़े सीवरों के जल का एक बड़ा हिस्सा अन्त: जलीय स्रोत से मिलकर उसे प्रदूषित कर देते हैं।

जल प्रदूषण से निपटना एक चुनौती :-

भारत में सालाना करीब 3.75 ट्रिलियन रुपये का पर्यावरणीय नुकसान होता है जिसमें जल प्रदूषण के कारण 470 से 610 बिलियन रुपये का नुकसान होता है। सभी क्षेत्रों में दिनों-दिन जल की मांग बढ़ना तय है। अत:

हम सबके सामने चुनौती यह है कि यह मांग किस प्रकार पूरी की जाये तथा पारिस्थितिकी तंत्रों पर भी नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

प्रकृति आधारित समाधान प्रकृति द्वारा प्रेरित व समर्थित होते हैं और ऐसी प्राकृतिक प्रक्रियाएं जल प्रबंधन सुधार में योगदान देती है। भारत प्राचीन जल संचयन, संरक्षण और सिंचाई परम्पराओं का देश है। इन्हीं को आज प्रकृति आधारित समाधान के तौर पर पुन: बहाल किया जा रहा है। प्रदूषित जल का मानव जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है, क्योंकि जल का अत्यधिक प्रयोग मानव पेयजल एवं अन्य कार्यों में करता है। अत: जल प्रदूषण से निपटना एक चुनौती पूर्ण कार्य है।

जल जनित बीमारियां :-

देश के कई हिस्से जल की कमी से जूझ रहे हैं, जिसके चलते कई भारतीयों को सुरक्षित, स्वच्छ पेयजल नहीं मिल पाता और वे जल जनित बीमारियों जैसे कोलेरा, टाइफाइड और डायरिया के शिकार हो जाते हैं। देश में 70 फीसदी बिमारियाँ जल जनित है, जिससे स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल की त्वरित आवश्यकता स्पष्ट होती है। जलवायु, जल एवं स्वास्थ्य के तिहरे संकट को हल करने के लिए स्वास्थ्य योजना को प्रत्येक कार्य के केन्द्र में रखना आवश्यक है। इस मुद्दे को हल करने के लिए वाश (वाटर, सेनेटाइजेशन एण्ड हाइजीन) को प्राथमिकता देनी होगी।

जल प्रबंधन एवं संरक्षण :-

सरकार को सभी नागरिकों के लिए स्वच्छ जल की उपलब्धता को प्राथमिकता देनी होगी। इसके लिए जल संरक्षण और प्रबंधन उपायों में निवेश किया जा सकता है जैसे वर्षा जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण और प्रदूषण में कटौती। बेहतर शहरी नियोजन की भी जरूरत है, जिसमें सुरक्षित पेयजल, बेहतर स्वच्छता व बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन शामिल हो।

इसके अलावा स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा में अधिक निवेश की आवश्यकता भी है, ताकि बेहतर परिणाम मिलें और जल जनित व वायु प्रदूषण से जुड़ी बीमारियाँ कम हों।

विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की आवश्यकता :-

स्वास्थ्य संकट के मूल कारणों के निवारण के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र, जल क्षेत्र, व पर्यावरण क्षेत्र में सहयोग आवश्यक है। जल जनित बीमारियों को कम करने व सम्पूर्ण स्वास्थ्य परिणामों को कम करने व सम्पूर्ण स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने के लिए स्वच्छ जल उपलब्धता बढ़ाना व स्वच्छता काफी महत्वपूर्ण है। इसके अलावा स्वास्थ्य नियोजन में प्रारंभिक चेतावनी तंत्र विकास व आपदा प्रबंधन योजनाएं शामिल की जा सकती है, ताकि मौसम की चरम स्थितियों का प्रभाव कम किया जा सके।

जल संकट के प्रभाव :-

जल संकट के प्रमुख प्रभाव निम्न हो सकते हैं--

- कृषि उत्पादन में जल की मुख्य भूमिका होती है जिसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन प्रभावित हो सकता है।
- जल संकट से आजीविका का खतरा उत्पन्न होता है, जो व्यक्ति के प्रवसन के लिए जिम्मेदार होता है।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.5.2023-691-693

- जल संकट का प्रत्यक्ष एवं नकारात्मक प्रभाव जैव विविधता पर पडता है।v जल संकट से मानव जीवन प्रभावित होता है, तथा स्वच्छ जल न मिल पाने की वजह से स्वास्थ्य संकट भी उबरकर सामने आता है।
- पशुओं एवं वनस्पतियों को भी जल संकट का सामना करना पडता है जिसके कारण उन्हें भी क्षति झेलनी पड़ती है।

जल संकट को दूर करने के उपाय :-

जल संकट वैश्विक स्तर पर दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। अत: हमें जल संकट को दूर करने के उपाय खोजने होंगें। इस हेतु निम्न लिखित उपाय अपनाये जा सकते हैं--

- वर्षा जल को संग्रहीत करने हेतु टैंकों, चेक-डैम और तालाबों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- नुक्कड़ नाटकों, अखबारों तथा टेलीविजन आदि के माध्यम से लोगों में जागरूकता लायी जाये।
- दैनिक जीवन में होने वाले जल खपत को नियंत्रित करके भी जल संकट को टाला जा सकता है।
- खेती में उन फसलों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिनके उत्पादन में कम पानी की आवश्यकता होती हैं।
- सरकार को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जल संकट से निपटने के लिए योजनाएं बनानी चाहिए।
- लोगों में जल संरक्षण एवं उसके सीमित संसाधनों के प्रति जागरूकता फैला कर भी जल संकट को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष :-

जल संकट व स्वास्थ्य संकट के मुद्दे आपस में संबद्ध है। इनके मूल कारणों से निपटने के लिए समेकित और समन्वित प्रयासों की जरूरत है। जल संकट का समाधान कर सबके लिए स्वास्थ्यवर्धक भविष्य सुनिश्चित करना जरूरी है। देश के कई हिस्से जल की कमी से जूझ रहे हैं। इस कारण लोगों को सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल नहीं मिल पाता और वे जल जनित बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। अत: इनसे निपटना होगा जो समेकित व समन्वित प्रयास से ही संभव है। जल उपयोग मात्र की वस्तु न हो कर आर्थिक और सामाजिक वस्तु है। सार्वजनिक स्तर पर इसके प्रबंधन व निगरानी की जिम्मेदारी बनती है। जल उपयोग प्राथमिकता, मात्रा व गुणवक्ता में संतुलन भविष्य की महत्वपूर्ण जरूरत है।

Financial Support and Sponsorship: Nil

Conflict of Interest: There are no conflicts of interest

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजस्थान पत्रिका न्यूज पेपर
2. जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर-राजस्थान

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.5.2023-691-693